वैदिक कालीन शिक्षा साहित्य के उपकरण

कजरी मानसी ऐश्वर्यम्

भारतीय शैक्षिक तथा सांस्कृतिक परम्पराओं का इतिहास विश्व में सबसे प्राचीन है। इसका अस्तित्व विगत 4000 वर्षो से भी ज्यादा सुदूर अतीत में दृष्टिगोचर होता है।

"Ancient Indian civilization is one of the most. interesting and important civilization of the world. If we want to understand it properly, we must study its system of education which preserved. Propagated and modified it during the course of more than four thousand years."

ALTEKAR, A.S. Education, In Ancient India, P-1-2)

प्राचीन भारतीयों ने शिक्षा को अत्यधिक महत्व प्रदान किया। भौतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान तथा विभिन्न उत्तरदायित्वों के विधिवत निर्वाह के लिए शिक्षा की महती आवश्यकता को सदैव स्वीकार किया गया।

अशरक्ष वैदिक युग से ही शिक्षा को दैदीप्यमानित प्रकाश का संपुष्ट स्त्रोत माना गया है जो मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का आलोकित करते हुए उसे सही दिशा निर्देश देता है।

''सुभाषित रत्न संदोह'' में अभिप्रेषित है कि–

"ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है जो उसे समुल तत्त्वों के से अवगत होने में सहायता करता है तथा सही व नैतिक कार्यों को करने की विधि बताता है।"